ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-11* December- 2020
Innovation The Research Concept

प्रेमचन्द की पारिवारिक अवधारणा (उपन्यासों के संदर्भ से)

Traditional Concept of Premchand (With Reference to Novels)

Paper Submission: 15/12/2020, Date of Acceptance: 26/12/2020, Date of Publication: 27/12/2020

वीना सोनी
सह आचार्य,
हिन्दी विभाग,
सनातन धर्म राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर,
राजस्थान, भारत

सारांश

प्रेमचंद के उपन्यास परिवार के इर्द–गिर्द घूमते हैं। व्यक्ति परिवार से विलग नहीं रह सकता। समाज व परिवार के बिना उसका कोई अस्तित्व नहीं। पारिवारिक सौहार्द, कटुता, नारी दशा, नोंक–झोंक का जीवंत निरूपण किया है। पारिवारिक समस्याओं का सजीव चित्रण प्रेमचंद के उपन्यासों में ही संभव है।

Premchand's novels revolve around the family. A person cannot remain separated from the family. It does not exist without society and family. Has given a lively representation of family harmony, bitterness, feminine condition, heartbreak. Live depictions of family problems are possible only in Premchand's novels.

मुख्य शब्द : परदुरूखकातर, पूर्वाग्रहों, कुठाराघात, किंकर्तव्यविमूढ़, कौटुंबिक, संवर्धन ।

Pardurukhaktar, Prejudices, Astragalism, Kinkartavvimuddha, Family, Promotion.

प्रस्तावना

साहित्य जीवन के सत्यं, शिवं, सुन्दरं का अनुष्ठान है, मानव की संस्कृति व सभ्यता की अभिव्यक्ति है, सामाजिक जीवन के सूक्ष्म चित्रण का पर्याय है और पाठक के संवेगों को प्रभावित करने वाली अंतर्दृष्टि है। साहित्य का कलेवर विस्तृत है। उसमें गद्य, पद्य, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि विविध विधाएं समाहित हैं। गद्य की विधाएं मानव को सुसंस्कारित करने के साथ–साथ उसे धीर–गंभीर, परदुःखकार , सहृदय और अपनत्व की भावना को जीवंतता प्रदान करती है। इस संदर्भ में प्रेमचन्द की यह उक्ति उचित ही है–''साहित्य का आधार जीवन है। इसी नींव पर साहित्य की दीवार खड़ी होती है, उसकी अटारियां मीनार ओर गुबंद बनते हैं।''(1)

अध्ययन का उद्देश्य

प्रेमचंद ने अपने साहित्य में 'परिवार' को प्रमुखता दी। उन्होंने मानवतावादी भावनाओं से प्रेरित होकर जीवन की सहजता का वर्णन किया। उनके उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ, सामाजिक चेतना और सामाजिक परिवेश की सूक्ष्मता के दर्शन होते हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य प्रेमचंद की पारिवारिक व सामाजिक भावना को उजागर करना है।

विषय विस्तार

साहित्य में उपन्यास विधा का प्रमुख स्थान है। उपन्यास में सामाजिक जीवन का विशद चित्रण होता है। इसमें मानव के वैयक्तिक जीवन का सूक्ष्म चित्र उकेरा जाता है। उपन्यास का प्रादुर्भाव समाज की परिस्थितियों को ही मानते हैं। आधुनिक उपन्यास के जन्म के संदर्भ में वाजपेयी जी का मत है–''यूरोप के मध्य युग के सामंती समाज का अंत होने पर जब नवीन औद्योगिक समाज का आविर्भाव हो रहा था और नगरों में नवीन मध्यवर्ग की सत्ता स्थापित हो रही थी, उसी समय उपन्यास के साहित्यांगन का आविर्भाव हुआ। '' (2) उपन्यास में उपन्यासकार जीवन के यथार्थ के साथ अपने अनुभवों, पूर्वाग्रहों, रूढ़ियों, संस्कारों, संस्कृति के साथ मानवीय चरित्रों का सूक्ष्म चित्रण करता है। प्रेमचंद के उपन्यासों की सफलता का श्रेय उनकी सूक्ष्म दृष्टि को जाता है।

प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में यथार्थ को स्थापित किया। तत्कालीन समाज का चित्रण करते हुए सामाजिक रूढ़ियों, संयुक्त परिवार का विघटन,

आडम्बर, स्त्रियों की दशा, शिक्षा का रूप आदि का वर्णन करते हुए सामाजिक–सांस्कृतिक प्रतिमानों को प्रतिष्ठित किया।

प्रेमचन्द युगीन समाज में संयुक्त परिवार पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से टूट रहे थे। प्रेमचंद का मानना था कि संयुक्त परिवार भारतीय संस्कृति का मूल है। परिवार में सभी एक दूसरे से रक्त संबंधों से जुड़े रहते हैं, एक दूसरे के सुख–दुःख में साथ देते हैं। सह–निवास, सह–त्यौहार, सह–भोजन, सह–भवन का सामूहिक उपभोग मानवीय भावनाओं को दृढ़ करता है। ''संयुक्त परिवार अपने आप में एक लघु संसार होता है।'' (3) प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में संयुक्त परिवार के विघटन को चित्रित किया है। प्रेमाश्रम, रंगभूमि, गबन, गोदान, निर्मला आदि उपन्यास इसके उदाहरण है। 'प्रेमाश्रम' का ज्ञानशंकर संयुक्त परिवार के पालन पोषण से खिन्न होकर पिता से कहता है– ''आज तीस साल पहले अलग हो गये होते तो हमारी दशा ऐसी खराब न होती।'' (4) 'रंगभूमि' में भी ताहिर अली के माध्यम से मध्यवर्गीय संयुक्त परिवार के पालन–पोषण की कठिनाईयों को दर्शाया है।

संयुक्त परिवार में स्नेह, आदर के साथ–साथ कलह तथा कटुता के अवसर भी आते हैं। आपसी रिश्तों में द्वेष व ईर्ष्या की भावना भी दिखाई देती है। सास–बहू में ममता के साथ यदा कदा नोक–झोंक भी होती है, फिर भी संयुक्त परिवार श्रेष्ठ होता है। प्रेमचंद ने 'गोदान'की धनिया और झुनिया के रिश्तों में इसकी सहज अभिव्यक्ति की है। सास–बहू में ममत्व, कटुता आती रहती है, रिश्ता चलता रहता है। गोबर द्वारा झुनिया को गर्भावस्था में छोड़ देने पर धनिया का ममत्व, दया व प्यार उमड़ जाता है। वह पुत्र गोबर को भला–बुरा कहने से नहीं चूकती। प्रेमचंद ने पारिवारिक गठजोड़ के कई पक्ष उभारे हैं। भाई–भाई के प्रति प्रेम को 'गोदान' के होरी व हीरा के द्वारा व्यक्त किया है।

आर्थिक परिस्थितियों के कारण संयुक्तपरिवार विभाजित होने लगे हैं।''कई पीढ़ियों के सदस्यों से मिलकर बने विशाल परिवार से चलकर अधिकाधिक पति–पत्नी और अविवाहित बच्चों के परिवार की छोटी इकाई का रूप ले रहा है।'' (5) प्रेमचंद ने एकल परिवार की समस्याओं को वर्णित किया है। नितान्त वैयक्तिक जीवन जीने पर कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। झुनिया ने शहर में अपने पुत्र को किन परिस्थितियों में पाला, इसको 'गोदान' में हम देख सकते हैं।

भारतीय परिवार की मुख्यतः दो धुरी हैं–जाति तथा समुदाय। तत्कालीन युग में औद्योगिकरण के प्रभाव से इन धुरियों पर कुठाराघात हुआ। श्रम–आपूर्ति हेतु ग्रामों से नगरों की ओर युवाओं का प्रस्थान हुआ। एकल परिवार में वृद्धि होने लगी। इससे मानसिक तनाव बढ़ने लगा। आर्थिक व्यवस्था में उतार–चढ़ाव होने से परिवारों में खीझ, कलह, स्वार्थ की भावना, ईर्ष्या उत्पन्न होने लगी। प्रेमचन्द ''केवल सामाजिक संघर्ष चित्रित नहीं करते, वे उनकी विभिन्न संस्कृति और घरेलू जीवन के भी सच्ची तस्वीर खींचते हैं।'' (6) 'प्रेमाश्रम' का ज्ञानशंकर सदियों से संजाये हुए संयुक्त परिवार को आर्थिक कारण से भंग करने की सोचने लगे। प्रभाशंकर तथा जटाशंकर दोनों भाई संयुक्त रूप से रहते आये थे। जटा की मृत्यु के पश्चात् उनका पुत्र ज्ञान अपने चाचा से किसी ना किसी बात पर झगड़ता रहता था। वह संयुक्त परिवार से अलग रहना चाहता था। ''अब उन्हें रात–दिन यही दुश्चिंता रहती थी कि किसी तरह चाचा से अलग हो जाऊँ। यह विचार सर्वथा उनके स्वार्थानुकूल था। उनके ऊपर केवल तीन प्राणियों का भार था, जबकि इलाके की आमदनी का एक बड़ा भाग प्रभाशंकर के काम आता था।'' (7)

प्रेमचंद के उपन्यासों में विविध प्रकार के पारिवारिक दाम्पत्य जीवन की समस्यायें उभर कर आई हैं। पति–पत्नी के संबंधों, प्रेमी–प्रेमिका के रिश्तों, मां–पिता के विचारों व चिंताओं की अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। स्त्री व पुरूष समाज के दो पहिये माने जाते हैं। सामाजिक सत्ता समान रूप से दोनों पर निर्भर रहती है। एक पक्ष दुर्बल होगा तो समाज व परिवार का विकास ठीक प्रकार से नहीं हो पायेगा। सामाजिक परंपरा और स्त्री–पुरूष की भागीदारी की झांकी 'गोदान' में मिलती है। एक तरफ मालती व मेहता है, जो शिक्षित वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं, तो दूसरी तरफ होरी व धनिया सामाजिक रिश्तों को निभाते हैं।

भारतीय समाज में विवाह पवित्र बंधन माना जाता है। विवाह परिवार का मूल है जिससे समाज का निर्माण होता हे। पति–पत्नी के पवित्र रिश्ते विश्वास की डोर में बंधे रहते हैं, इस रिश्ते का निर्वाह दोनों ओर से होता है। यदि दहेज प्रथा के कारण कन्या का विवाह टूटता है या ज्यादा उम्र वाले व्यक्ति से होता है तो दोनों का जीवन सामान्य नहीं रह पाता। प्रेमचंद ने दहेज प्रथा तथा अनमेल विवाह केदुष्परिणाम तथा मानसिक अवस्था को उपन्यास के पात्रों के माध्यम से व्यक्त किया हैं।'निर्मला' उपन्यास में अनमेल विवाह से जूझती हुई निर्मला की मानसिक स्थिति प्रस्तुत की है। दहेज के अभाव में निर्मला का विवाह अधेड़ तोताराम से हो जाता है, जो पिता सदृश है। आयु के अंतर से दाम्पत्य सुख का अभाव रहता है। निर्मला पति से दूर–दूर रहती है, ''बेजोड़ विवाह हो जाने से वह चाहे किसी की ओर आंख उठाकर न देखे पर उसका चित्त दुःखी रहता है।'' (8) 'गोदान' की रूपा का विवाह भी अधेड़ रामसेवक से हो जाता है परंतु वह निर्मला की भांति घुटती नहीं है, ''खूब बनाव सिंगार करती क्योंकि रूपा ने बचपन में रूपयों का अभाव देखा था, यहां ससुराल में धन की कमी ना थी।''(9)

प्रेमचंद विधवा विवाह के समर्थक, अनमेल विवाह और अंतर्जातीय विवाह के विरोधी थे। प्रेम विवाह करने पर कठिनाईयों का सामनाकरना पड़ता है। समाज व परिवार में उनकी स्थिति किंकर्तव्यविमूढ़ सी बनी रहती है। परिवार व समाज इस विवाह की सामाजिक स्वीकृति नहीं देता है। तत्कालीन युग की सामाजिक स्थिति प्रेम विवाह को लेकर अत्यन्त कठोर थी। प्रेमचंद ने चक्रधर के माध्यम से प्रेम विवाह करने वाले युवकों की मानसिक स्थिति का वर्णन किया। विवाहोपरांत चक्रधर को पारिवारिक परंपराओं और सामाजिक बंधन की स्मृति हो आती है–''वह घर तो जो रहे थे, पर उस घर के द्वार बंद थे, उस घर में हृदय की गांठ से भी अधिक ताले पड़े हुए थे, जिनके खुलने की

क्या, टूटने की भी आशा न थी। पिता का क्रोध, माता का तिरस्कार, संबंधियों की अवहेलना इन सभी चिंताओं से चित्त उद्विग्न हो रहा था।'' (10) 'रंगभूमि' का विनय भी अंतर्जातीय विवाह की चुनौती को जानता था इसलिए प्रेमचंद ने उसको देश के लिए आत्मोत्सर्ग करते हुए दिखाया है।

भारतीय परिवार में विधवा स्त्री की दयनीय दशा है। वर्तमान समाज में भी इनकी दुरवस्था देख सकते हैं। आज भी इनको मांगलिक कार्यों से पृथक रखा जाता है। परिवार में तिरस्कार मिलता है। प्रेमचंद ने स्वयं विधवा–विवाह किया था। वे विधवाओं को परिवार व समाज में गौरवशाली स्थान पर प्रतिष्ठित करना चाहते थे। विधवा स्त्री को विषाद, दुःख और सामाजिक कुरीतियों से मुक्त करना चाहते थे। उन्होंने अपने उपन्यासों में विधवा समस्या को सुधारवादी दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया। 'गबन' की रतन के माध्यम से भारतीय समाज में नारी–परवशता को उजागर किया। संयुक्त परिवार में स्त्री तब तक सुरक्षित है जब तक पति जीवित है। पति की मृत्यु के उपरांत विधवा स्त्री 'दूसरों पर आश्रित' हो जाती है। पति की सम्पत्ति पर उसका अधिकार नहीं रह जाता। वह विद्रोह की आग में झुलसती रहती है। रतन की मनःस्थिति को उभार कर प्रेमचंद विधवा नारी को परिवार में महत्वपूर्ण स्थान दिलवाना चाहते थे। 'गोदान' की झुनिया (विधवा) का विवाह, गोबर से करवाकर विधवा–विवाह की स्वीकृति दी है। 'प्रतिज्ञा' के अमृतराय विधवा–विवाह के समर्थक थे। उनका विवाह प्रेमा से तय हो गया था परंतु उनकी अंतरात्मा विधवा स्त्री से विवाह करना चाहती थी। प्रेमा का यह कहना कि ''ऐसे सुशिक्षित पुरूष अगर यह काम नहीं करेंगे तो कौन करेगा? जब तक ऐसे लोग साहस से काम ना लेंगे, हमारी अभागिन बहिनों की रक्षा कौन करेगा?'' (11) यह कथन प्रेमचन्द की पारिवारिक अवधारणा को व्यक्त करने के लिए पर्याप्त है। अमृतराय के माध्यम से प्रेमचंद ने परिवार का केन्द्र माने जाने वाले पुरूषों की बदलती सोच को भी व्यक्त किया है। 'प्रतिज्ञा' की पूर्णा और 'निर्मला' की रूक्मिणी के द्वारा भी विधवा–नारी के दारूण भाव व्यक्त किये हैं ताकि परिवार में विधवा स्त्री को दुर्बल और विवश ना समझा जावे। परंतु खेद है कि वर्तमान दौर में भी ''कुछ जातियों में आज भी विधवा स्त्री को पति की मृत्यु के पश्चात् छः माह तक अंधेरी कोठारी में एकांतवास करना पड़ता है ..... न्याय के नाम अन्याय की धीज, भट्टी में तपा लोहा हाथ पर रखते हैं.....पीड़िता जली तो बलात्कारी बरी'' (12) हो जाते हैं। 21वीं सदी में नारी को प्रताड़ित करने की प्रथाएं वास्तव में विचारणीय हैं। तभी तो प्रेमचंद ने 'कर्मभूमि' की मुन्नी को बलात्कारियों का वध करते हुए समाज के समक्ष नारी–साहस को विस्तार दिया।

प्रेमचंद के उपन्यासों में पारिवारिक मान्यताएं आदर्श रूप में उभरी हैं। उन्होंने पारिवारिक समस्याओं का परिष्कार किया। ''कौटुम्बिक भूमि तो इन्हें इतनी प्यारी थी कि इनका एक भी ऐसा उपन्यास हमें नहीं मिलता जिसमें कि पारिवारिक समस्याओं को ना उठाया गया हो।''(13) मुन्नी ऐसी ही आदर्शवादी स्त्री है। वह संकारवान है। निरपराध है। परंतु समाज की दृष्टि में पतिता है। मुन्नी का गोरों ने बलात्कार किया था इसलिए वह अपने पति व पुत्र पर स्वयं की छाया भी नहीं पड़ने देती। वास्तव में ''प्रेमचंद का साहित्य भारतीय समाज का दर्पण है।''(14)

प्रेमचंद के अधिकांश उपन्यासों का केन्द्र 'परिवार' है। उपन्यास में भले ही कई घटनाओंका वर्णन हुआ है परंतु वे घटनाएं 'परिवार' के इर्द–गिर्द घूमती प्रतीत होती हैं। परिवार से समाज और समाज से राष्ट्र का निर्माण होता है। जब तक मूल विकसित नहीं होगा तक तक वृक्ष पुष्पित–पल्लवित नहीं होगा। प्रेमचंद ने राष्ट्र–उत्थान के लिए शिक्षा को महत्व दिया। शिक्षा से व्यक्ति का मानसिक विकास होता है। उसमें आत्मबल व आत्मविश्वास की वृद्धि होती है। शिक्षा सद्मार्ग पर ले जाती है। प्रेमचंद ने पुरूष के साथ ही स्त्री–शिक्षा पर बल दिया। स्त्री शिक्षित होगी तो परिवार सुदृढ़ होगा। 'निर्मला' की निर्मला मंसाराम से अंग्रेजी भाषा सीख रही है। 'कर्मभूमि' की सुखदा शिक्षित है। वह अध्यापिका बनकर आत्मनिर्भर हो गई है। सलोनी ने शिक्षा के विकास के लिए पाठशाला हेतु अपना घर दे दिया है। 'वरदान' की विरजन स्त्री शिक्षा की समर्थक है और स्वयं कविताएं भी लिखती है। 'गोदान' की मालती नारी शिक्षा का प्रतीक बनकर उभरी है। परिवार में स्त्री शिक्षा को पुरूष वर्ग का संबल भी मिला है। 'गोदान' के मिस्टर कौल ऐसे ही पात्र हैं, जो स्त्री शिक्षा के समर्थक हैं। अपनी तीनों पुत्रियों–मालती, सरोज, वरदा को उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अधिकारी मानते हैं। परिवार में स्त्री शिक्षा के प्रति उत्कृष्ट सोच व लालसा को प्रेमचंद ने बखूबी व्यक्त किया। मि. कौल का कहना कि ''तीनों को इंग्लैण्ड भेजकर शिक्षा के उच्च शिखर पर पहुंचा दें। अन्य बहुत से बड़े आदमियों की तरह उनका भी खयाल था, कि इंग्लैण्ड में शिक्षा पाकर आदमी कुछ और हो जाता है'',(15) नारी शिक्षा व स्वतन्त्रता को संबल देता है।

प्रेमचन्द के उपन्यासों में पुरूष पात्र की तुलना में स्त्री पात्र ज्यादा सशक्त दिखाई देते हैं। उनके अनेक पुरूष पात्र किसी न किसी रूप में शोषित, पीड़ित व दमित रहे हैं। कुछ पुरूष पात्रों को उनकी मानवीय गुणों के कारण परिवार में, समाज में उच्च स्थान मिला है। वे आदर्श चरित्र के रूप में प्रस्तुत हुए हैं। 'रंगभूमि' का सूरदास, 'प्रेमाश्रम' का प्रेमशंकर, 'कर्मभूमि' का का अमरकांत, 'कायाकल्प' का चक्रधर, 'गोदान' का होरी इनके प्रमुख उदाहरण हैं, जिन्होंने अपने सद्गुणों से परिवार में अपनी शूरता, धैर्य, देशप्रेम, स्वाभिमान, शील, सदाचार जैसे मूल्यों को प्रदर्शित किया। इन पात्रों ने भारतीय संस्कृति को व्यक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

निष्कर्ष

प्रेमचंद ने उपन्यासों में 'परिवार' को यथार्थ के धरातल पर रखा। उनके उपन्यासों में भारतीय पाश्चात्य संस्कृति, औद्योगिक क्रांति, संयुक्त परिवार का विघटन, पूंजीवाद, शिक्षा तथा स्त्रीदशा के विविध आयाम दृष्टिगोचर होते हैं। युगीन परिस्थितियों में परिवार की आवश्यकता, मानव जाति के संवर्धन और जातीय जीवन का मार्मिक पक्ष दिखाई देता है। प्रेमचंद ने परिवार में पिता–पुत्र,

माँ–पुत्री, पति–पत्नी के संबंधों को व्यक्त कर उपन्यास विधा में एक नूतन युग का सूत्रपात किया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *प्रेमचंद : साहित्य का उद्देश्य, पृ–20*
2. *आचार्य नंद दुलारे वाजपेयीः आधुनिक साहित्य, पृ–123*
3. *इरावती कर्वे : किनशिप ऑर्गेनाइजेशन, पृ–136*
4. *प्रेमचंदः प्रेमाश्रम, पृ–28*
5. *डॉ. अक्षय आर देसाई : रूरल सोशियोलोजी इन इंडिया, पृ–40*
6. *रामविलास शर्माः कथाविवेचना और गद्य शिल्प, पृ–14*
7. *प्रेमचंदः प्रेमाश्रम, पृ–28*
8. *वही : निर्मला, पृ–95*
9. *वही : गोदान, पृ–295–96*
10. *वही : कायाकल्प, पृ–62*
11. *वही : प्रतिज्ञा, पृ–11*
12. *दैनिक भास्कर : 13–14 नवम्बर 2020, मुख्य पृष्ठ*
13. *त्रिभुवन सिंहः हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, पृ–71*
14. *रामविलास शर्माः कथा विवेचना और गद्य शिल्प, पृ–11*
15. *प्रेमचंद : गोदान, पृ.–131*